स्वर्णिम संस्कृति कला संदेश पत्रिका

अंक-83 अप्रैल से जून 2025 (त्रैमासिक समाचार पत्रिका) प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउण्ट आबू, (राज.)

दिव्य गुणों की धारणा से दिव्य मानव बनने को संकल्पित हुए कलाकार

विश्व की समस्त समस्याओं का हल है कला में - डॉ. नीरजा गुप्ता।

ज्ञान सरोवर आबू पर्वत: परम कलाकार की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति दिव्य मानव विषय पर सम्मेलन -दिनांक 19 जून, 2025: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउण्ट आबू स्थित ज्ञान सरोवर परिसर के हारमनी हॉल सभागार में भारत के कोने कोने से आए लगभग 400 कला प्रेमियों की उपस्थिति में सम्मेलन के स्वागत सत्र का भव्य आयोजन हुआ। इस सत्र में सभी प्रबुद्धजन ने अपने अपने अनमोल विचारों से सभागार में उपस्थित जन समुदाय को लाभान्वित किया।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका **राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन** ने सभागार में उपस्थित आए कला प्रेमी मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि परमात्मा ने मानव को इस दुनिया में दिव्य मानव के रूप में सभी गुणों, विशेषताओं और कलाओं सहित भेजा था।

ब्रह्माकुमारी पूनम बहन, राष्ट्रीय संयोजिका कला एवं संस्कृति प्रभाग, ने कहा निराकार ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा जिसकी सर्वश्रेष्ठ कृति दिव्य मानव है, उस हजूर को अपने जीवन में हाजिर अनुभव करने से ही जीवन मार्ग सहज हो जाता है।

ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल, चेयरपर्सन साइंस एण्ड इंजीनियरिंग विंग ने ज्ञान सरोवर परिसर के बारे में अवगत कराया। **ब्रह्माकुमार दयाल भाई,** वाइस चेयरपर्सन कला एवं संस्कृति प्रभाग ने काफ्रेंस का महत्व समझाते हुए कहा कि समय की आवश्यकता है कि हम सर्वशक्तिमान परमात्मा को अपना साथी बनाएं ।सम्मेलन के स्वागत सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे, कुलाधिपति, राजा मानसिंह तोमर, संगीत एवं कला विश्वविद्यालय,ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका दीदी, चेयरपर्सन कला एवं संस्कृति प्रभाग, बॉलीवुड कलाकार भ्राता अशोक वैध उर्फ जुगनू, ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन, निदेशक ज्ञान सरोवर, भ्राता ऋषिकेश चूरी अध्यक्ष, ऑल इंडिया सिने वर्कर्स एसोसिएशन, मुंबई, भ्राता हरविन्दर मंकर- कार्टूनिस्ट, अभिनेत्री अंजलि अरोड़ा बीके अनिल भाई, गामदेवी सहित अनेक महानुभाव उपस्थित रहें। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए ब्र.कु. तपस्विनी बहन, ब्र.कु. रचना बहन, ब्र.कु. कुंदा बहन ने सम्मेलन के विभिन्न सत्रों का सुचारु रूप से मंच संचालन किया।

ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका दीदी, चेयरपर्सन कला एवं संस्कृति प्रभाग

स्वयं में छिपे हुए देवत्व का हम प्रकटीकरण करें। मनुष्य अपनी विवेक रूपी विशेषता के द्वारा दानव से मानव बन सकता है, मानव से योगी बन सकता है और मानव से देव भी बन सकता है। हमें अपनी विशेषताओं को महसूस करते हुए उन्हें विकसित करना चाहिए और गलतियां महसूस करके उन्हें मिटाने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे, कुलाधिपति, राजा मानसिंह तोमर, संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना मानव है जिसमें भावनाएं, संवेग, सुख, दुख, चिन्ता, आवेग, स्मरण, विचार आदि विशेषताएं परमात्मा ने दी है। मनुष्य कला के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। जब कला में दर्शन शामिल हो जाए तो स्वतः ही आध्यात्मिकता जीवन में आती है जो कला में भी प्रकट होती है। दर्शन और आध्यात्मिकता से मिश्रित कला ही दर्शनीय होती है।

भ्राता ऋषिकेश चूरी अध्यक्ष, ऑल इंडिया सिने वर्कर्स एसोसिएशन, मुझे यहां आकर आन्तरिक शांति और सुखानुभूति हुई। यहाँ आना मेरे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है।

बॉलीवुड कलाकार भ्राता अशोक वैध उर्फ जुगनू मुझे बाल अवस्था में ही सेवा केन्द्र पर जाने का अवसर मिला। मुझे अनुभव होता है कि परमात्मा के आशीर्वाद से विश्व परिवर्तन का कार्य निर्विघ्न रूप से सारी दुनिया में चल रहा है, परमात्मा हम सबके साथ है, केवल हमें उनकी आज्ञाओं पर चलना है।

ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन, निदेशक ज्ञान सरोवर, ने कहा परम कलाकार परमात्मा अपनी शिक्षाओं के माध्यम से जीवन श्रेष्ठ बनाना सिखाते हैं। मनुष्य को सृष्टि रूपी नाट्यमंच पर श्रेष्ठ चरित्र बनाकर अपना पात्र निभाना चाहिए। यही सबसे बड़ी कला है।

अंजलि अरोड़ा अभिनेत्री, मुंबई परमात्मा हमें देना सिखाता है, इसलिए हमें सबको शुभकामनाएं देना चाहिए, दुआएं देनी चाहिए। जितना निस्वार्थ भाव से देने का भाव हमारे मन में होगा, उतना ही हमारे जीवन में दिव्य परिवर्तन होने लगेंगे।

भ्राता हरविन्दर मंकर, कार्टूनिस्ट ,परमात्मा के साथ का एहसास तभी होता है जब हम पवित्र मन से उसे पुकारते हैं। अहंकार छोड़कर अपने लक्ष्य की ओर पहला कदम बढ़ाते ही परमात्मा हमारा हाथ पकड़कर आगे बढ़ाता है जिससे हमारी शेष यात्रा आसान हो जाती है।

परमात्म स्मृति से तन-मन को स्वस्थ सुन्दर बना सकते हैं- भ्राता प्रहलाद राय

ब्रह्माकुमारी सुदेश दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

कला वही जो सुख दे, आनन्द दे, प्रेम दे, पत्थर को पारस कर दे, काँटों को फूल बना दे। दुनिया में अनेक कलाएं हैं जिनकी नकल की जा सकती है लेकिन परमात्मा जो मानव को देवता बनाने की कला जानता है, इस कला की नकल नहीं की जा सकती।

राजेश जायस अभिनेता, मुंबई

इस प्रांगण की पवित्रता और शांति का अनुभव अभूलनीय है। यहाँ आना मेरे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य होने के साथ साथ मुझे एक अनमोल समझ मिली कि एक कलाकार या साहित्यकार यदि नैतिक मूल्यों पर आधारित कला की रचना करे तो वह निश्चित रूप से प्रशंसा का पात्र होता है।

अभिनेत्री मोनिका पटेल

गत 13 वर्ष पहले मैं ब्रह्माकुमारीज के सम्पर्क में आई और संस्थान व कला एवं संस्कृति प्रभाग के सक्रिय सदस्यों का सहयोग पाकर मैं यही अनुभव करती हूँ कि परमात्मा स्वयं मेरा साथी और सहयोगी है।

पण्डित मनबोधक, मुम्बई

ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के बाद मुझे मेरे जीवन का मोल समझ आया। जीवन की तीव्र रफ्तार के बीच यदि हम कुछ पल ठहरकर अपने पिता परमात्मा को याद करें।

ब्रह्माकुमार दयाल भाई, उपाध्यक्ष, कला-संस्कृति प्रभाग

इस सम्मेलन में ईश्वरीय ज्ञान की सरिता में सभी ने अपने आपको सराबोर किया है। फिर भी आत्मा की उन्नति तभी सम्भव है जब ईश्वरीय ज्ञान प्रतिदिन सुना जाए।

धर्मेन्द्र गुप्ता अभिनेता

आध्यात्मिकता का अभाव और भौतिकता की प्रचुरता से जीवन का रस समाप्त हो जाता है। जीवन के जिस सही मार्ग की हम तलाश कर रहे हैं, जीवन के सही अर्थ को खोज रहे हैं, वह इस संस्थान में दिए जा रहे ज्ञान से प्राप्त होता है।

डॉ. नीरजा ए गुप्ता, कुलपति, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

विश्व की समस्त समस्याओं का हल कला में है। कला हमें अनेक प्रकार के रसों का अनुभव कराती है। हमारे मन की तार दिव्यतायुक्त कलाओं से जुड़ी होगी तभी हम अपने समाज में शांति की ज्योति प्रज्ज्वलित कर पाएंगे।

ब्रह्माकुमार सतीश भाई, मुख्यालय संयोजक ने कहा हमने संकल्प लिया है उसे व्यवहार में लाना है। कोई भी संकल्प तभी पूरा होता है जब उसे दृढ़ता के जल से प्रतिदिन सींचा जाए।

सम्पादकीय

आओ शांति, प्रेम और सद्भावना की ज्योति जलाएँ।

संगमयुग के इस पावन समय में हम सभी प्रभुप्रेमी आत्माएँ परमपिता शिव की संतान होने का गौरव अनुभव कर रही हैं। परमात्मा की निकटता, उनकी समानता और उनके द्वारा प्रदत्त दिव्य गुणों का ही प्रतिफल है कि आज हम अपने जीवन में पवित्रता की शक्ति द्वारा न केवल स्वयं को, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि व प्रकृति को भी पावन बनाने के यज्ञकार्य में निमित्त बन रहे हैं।

कला एवं संस्कृति प्रभाग का यह दैवी कर्तव्य है कि हम सभी उत्सवों, पर्वों व स्मृति-दिवसों को केवल बाह्य रीति से न मनाएँ, बल्कि उनमें गहन आध्यात्मिकता एवं ईश्वरीय संदेश को समाहित कर समाज में शांति, प्रेम और सद्भावना की ज्योति जलाएँ। यही कारण है कि जब-जब हम कोई भी आयोजन करते हैं, तो स्वयं भी उमंग-उत्साह का अनुभव करते हैं और साथ ही औरों को भी पंख लगाकर ऊँची उड़ान के लिए प्रेरित करते हैं।

सम्पादिका: **ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, अहमदाबाद,** संयुक्त सम्पादक: **ब्र.कु. सतीश, मधुबन,** प्रकाशक एवं मुद्रक: **ब्र.कु. आत्म प्रकाश,** ओम शान्ति प्रेस, न्यू ज्ञानामृत भवन, ओम शान्ति नगर, भूजेला, पोस्ट: भारा - 307032, जिला: सिरोही (राजस्थान), **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय** एवं **राजयोग शोध एवं शिक्षा प्रतिष्ठान,** माउण्ट आबू से प्रकाशित

ब्र.कु. दयाल, उपाध्यक्ष, कला एवं संस्कृति प्रभाग, ज्ञानसरोवर आबू पर्वत (राज.) - 307501, पी.बी.नं. 02
Contact: +91 98286 99737 | **Email:** artculturewing@bkivv.org

इस अंक में प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। प्रकाशन अथवा उपयोग के उपरान्त कतरन या जानकारी भेजने का कष्ट करें।